भाकृअनुप
ICAR

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agri search with a human touch

2015
International Year of Soils

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
CENTRAL INSTITUTE FOR SUBTROPICAL HORTICULTURE
ISO : 9001-2008

सी.आई.एस.एच. समाचार

जुलाई - दिसम्बर, 2015 संख्या : 2

निदेशक की कलम से

अधिकांश उपोष्ण फलों के पुष्पन प्रतिरूप में एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है। समय पूर्व, विलंबित तथा निरंतर होने वाले पुष्पन, असमान्य रूप से फल बैठना, फल परिपक्वता में विभिन्नता तथा पुनरूत्पादक शाखाओं में परिवर्तन होना आम, अमरूद तथा अन्य फलों की उत्पादकता को काफी हद तक प्रभावित करता है। इन समस्याओं का अब समेकित तरीके से निवारण किया जा रहा है। इस संदर्भ में संस्थान ने आम की ऋतृजैविकी को सघनतापूर्वक समझने के लिए बी.बी.सी.एच. स्केल के सॉफ्टवेयर को परिवर्तित कर विकसित किया है। इससे शोध की गुणवत्ता को दिशा देने में सहयोग मिलेगा।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ ने दिनांक 16 अक्टूबर, 2015 को पश्चिम बंगाल के मालदा में 70 एकड़ भूमि सी.आई.एस.एच. क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र के लिए प्राप्त कर ली है। इसके कार्यालयी परिसर, चार दीवारी तथा पम्प हाउस का निर्माण कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। वर्तमान समय में संस्थान मालदा स्थित फूड पार्क से कार्य कर रहा है। इस क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र में पूर्वोत्तर भारत के उपोष्ण क्षेत्र के फलों, सब्जियों तथा फूल फसलों से संबंधित अनुसंधान किये जायेंगे जिससे कि संबंधित विषयों के आनुवंशिक संसाधन प्रक्षेत्र तैयार किये जा सके।

(शैलेन्द्र राजन)

नये निदेशक से मिलिए

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ के कार्यवाहक निदेशक, डॉ. शैलेन्द्र राजन ने कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल से चयनोपरांत संस्थान के पूर्णकालिक निदेशक का पद भार दिनांक 26 सितंबर, 2015 को ग्रहण किया। डॉ. राजन ने गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से बागवानी में स्नातकोत्तर एवं भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नयी दिल्ली से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। निदेशक का कार्य ग्रहण करने से पूर्व उन्होंने संस्थान के फसल सुधार एवं जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग के अध्यक्ष के पद को सुशोभित किया है। उन्होंने फल फसल सुधार एवं उनके आनुवांशिकी संसाधनों के प्रबंधन पर कार्य किया है। इस कार्य के क्रम में उन्होंने प्रक्षेत्र में फल वृक्षों के संग्रह, संकलन, मूल्यांकन एवं उनका दस्तावेजीकरण, घटनाविज्ञानी अध्ययन, डिजिटल डेटाबेस, जी.आई.एस. प्रौद्योगिकी प्रयोग, डस मूल्यांकन तथा पी.जी.आर. से संबंधित आण्विक तकनीकों पर भी कार्य किया।

डॉ. शैलेन्द्र राजन ने अमरूद की चार उन्नत किस्मों को विकसित करने के अलावा अमरूद के एक उकठा प्रतिरोधी इंटरस्पेसिफिक मूलवृंत का भी विकास किया है। उन्होंने आम की दो नियमित फलत वाली रंगीन किस्मों को भी विकसित किया है। ऑन लाईन आनुवांशिक संसाधन डेटाबेस विकसित करने के अलावा उन्होंने आम के लिए सूचना प्रणाली भी विकसित की है। वे एक समुदाय आधारित संगठन बनाने में भी सफल रहे हैं। डॉ. राजन को उनके अनुसंधान संबंधी उद्यमी कार्यों के लिए अनेक विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किये गये हैं जिसमें बागवानी के लिये दिया जाने वाला डॉ. आर.एस. परोदा पुरस्कार, भारतीय बागवानी समिति तथा चाई का फेलो प्रमुख है। उन्होंने तीन पुस्तकों को लिखकर संपादित किया है। इसके अलावा उनके नाम 15 बुलेटिन, 96 शोध पत्र तथा 87 लोकप्रिय लेख एवं अनेक तकनीकी रिपोर्ट हैं।

विषय–वस्तु

1.	अनुसंधान की झलकियाँ	02
2.	समसामयिकी	04
3.	मानव संसाधन गतिविधियां	06
4.	बैठकें	06
5.	विविध	07
6.	वैयक्तिक	08

अनुसंधान की झलकियाँ

आँवला की उन्नत अभिगमनों की पहचान

संस्थान के प्रक्षेत्र जीन बैंक में आँवला के 21 अभिगमनों में से निम्नलिखित अभिगमनों को उन्नत पाया गया।

सी.आई.एस.एच–ए–31: यह बीजू पौधे से चयनित आँवला की किस्म है। इसके फलों का रंग लाल आभायुक्त लिये होता है। फल आकार में मध्यम (25 ग्राम/फल), औसत उत्पादन (41.76 कि.ग्रा./पेड़), सात वर्ष उपरान्त दर्ज किया गया। फल में प्रचुर मात्रा में न्यूट्रास्यूटिकल (एस्कार्बिक अम्ल 418.12 मि.ग्रा./100 ग्राम, पॉलीफिनाल 1.427 ग्राम टी.ए.इ./100 ग्राम गूदा एवं एफ. आर. ए.पी. मूल्य 214.04 मि.ग्रा./ग्राम फेरस सल्फेट) होता है।

सी. आई. एस. एच. ए–33 : यह किस्म भी बीजू पौधे से ही चयनित की गयी है। फल का वजन मध्यम (32–35 ग्राम/फल), अधिक उत्पादन (55.45 कि.ग्रा./वृक्ष), न्यूट्रास्यूटिकल प्रचुर (एस्कार्बिक अम्ल 490.13 मि.ग्रा/100 ग्राम, पॉलीफिनाल 1.718 ग्राम टी.ए.इ./100 ग्राम एवं एफ.आर.ए.पी. मूल्य 235.76 मि.ग्रा/ग्राम फेरस सल्फेट) होता है।

सी.आई.एस.एच. ए–31 (बाएं) और सी.आई.एस.एच. ए–33 (दाएं)

पूर्वी उत्तर प्रदेश में कटहल की विविधता

उत्तर प्रदेश के पूर्वोत्तर हिस्सों से कटहल की 36 उन्नत अभिगमनों की पहचान कर उनका संकलन किया गया। इन जननद्रव्यों को संस्थान के प्रक्षेत्र जीन बैंक में संरक्षित किया गया।

पूर्वी उत्तर प्रदेश में कटहल की विविधता

आम का फल भेदक : एक नयी समस्या

वर्ष 2012–2015 के दौरान उत्तर प्रदेश में आम के बागों में टोटरीसिड मॉथ नामक कीट को देखा गया। सामान्य रूप से यह कीट आम की नयी पत्तियों को खाता है। किन्तु इसके डिम्ब कच्चे अथवा कम पके फलों की त्वचा को चबा जाते हैं। थोड़ा वयस्क होने पर ये फल के गूदे तक को छेद कर एवं फल में निशान छोड़ देता है जो बाद में सड़न का रूप ले लेता है। ऐसे फल मानव उपयोग के लिए अनुपयुक्त हो जाते हैं। इस कीट की तीन किस्मों में से *आरचिप्स मिकासिना* को ही माल, मलिहाबाद एवं काकोरी के आम के बागों में अधिक देखा गया है। डिम्ब दो फलों के बीच शरण लेकर जाला बुनते हैं और फिर फल की त्वचा को खाते हैं। डिम्ब का प्रकोप मार्च–अप्रैल में प्रारम्भ होकर मई महीने में अधिक हो जाता है। इसके नियंत्रण के लिए डिम्ब को इकट्ठा कर मार देना चाहिए अथवा दो फलों को रगड़ने से भी यह मर जाता है। दो फलों के बीच कीटनाशक उपचारित पत्ती या दफ्ती रखने से भी इस कीट से निजात मिल जाती है। जब फल मार्बल अवस्था में हो तब लैम्डासइहैलोथ्रिन का 1 मि.ली प्रति लीटर अथवा क्विनालफॉस (25 ईसी) का 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से इनका अच्छा

फल भेदक कीट

नियंत्रण होता है। जरूरत पड़ने पर पन्द्रह दिन में पुनः छिड़काव करें।

उकठा : आम के लिए नया खतरा

हाल ही में उत्तर प्रदेश के आम के बागों में उकठा रोग देखा गया है। रूप एवं आण्विक चिन्हकों द्वारा इसके रोगाणु को पहचाना गया जिसका नाम *सिरैटोसिस्टिस फिम्ब्रिएटा* है। *सिरैटोसिस्टिस* उकठा नामक रोग उत्तर प्रदेश के 12 जिलों में पाया गया। लखनऊ, कन्नौज, बँदायू, बुलन्दशहर एवं अमरोहा जिलों में इस रोग से भारी नुकसान हुआ। इस बीमारी के लक्षण में पौधों का एकाएक सूखना, धीरे–धीरे क्षय होना एवं शाखाओं का सूखना इत्यादि प्रमुख है। इसके नियंत्रण हेतु तने में 15 सें. मी. गहरे एवं 1.2 सें.मी. चौड़े तीन–चार छिद्र बना कर 5 ग्राम थायोफेनेट मेथाइल को 20 मि.ली पानी में घोल कर इंजेक्शन दे अथवा 100–200 ग्राम थायोफेनेट मेथाइल या कार्बेन्डाजिम का

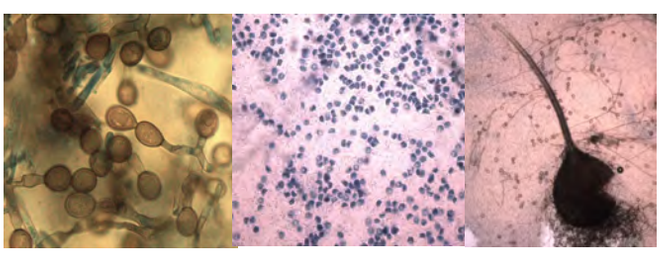

एल्युरियाल, पर्थेसियम एवं सिर्रेटोसिस्टिस फ्रिम्ब्रियेटा के एसको स्पोर्स

जड़ों में बुरकाव करें ताकि वह मिट्टी में अवशोषित हो जाये। 0.1 प्रतिशत प्रोपिकोनाजोल, थायोफिनेटे मेथाइल या कार्बेन्डाजिम का छिड़काव भी प्रभावकारी पाया गया है।

पौष्टिकता से भरपूर बेल के कच्चे फल

बेल के कच्चे फल न्यूट्रास्यूटिकल से भरपूर पाये गये हैं। अपरिपक्व फलों (अक्टूबर–नवंबर माह में) में अधिक मात्रा में स्वास्थ्यवर्धक गुण पाये गये। इन फलों में मारमेलोसिन एवं सोरेलिन की अधिक मात्रा पायी गयी। इन फलों को मुरब्बा, टॉफी बनाने अथवा औषधियों के हेतु उपयुक्त पाया गया जबकि परिपक्व फलों (मार्च–अप्रैल माह) में पेक्टिन ज्यादा पाया गया जो जैम, जेली, मारमालेड जैसे उत्पादों के लिए उपयुक्त हैं।

फल आधारित सिरका बनाने की तकनीक

सामान्यतः बाजार में गन्ना एवं जामुन का सिरका मिलता है। सिरका बनाने की विधि बेहद धीमी है जिसमें ज्यादा समय लगता है। संस्थान ने आम, आँवला, बेल, अंगूर एवं जामुन से एसिटिक अम्ल किण्वन विधि द्वारा सिरका बनाने की विधि का विकास किया है। इस विधि में एजेटोबैक्टर नामक बीजाणु को बाँस के टुकड़ों में फंसा लिया जाता है और सिरका तैयार किया जाता है। यह विधि न केवल अल्प समय में सिरका बनाती है अपितु इसमें फल की सुवास भी कायम रहती है।

फल आधारित सिरका

आम मूल्य श्रृंखला में तुड़ाई उपरांत नुकसान निर्धारण

उत्तर प्रदेश के लखनऊ एवं सहारनपुर जिलों में आम में तुड़ाई उपरान्त होने वाले नुकसान का अध्ययन किया गया। सर्वाधिक क्षति (10 प्रतिशत) पक्वन की अवस्था में पायी गयी। इसके अलावा 5.8 प्रतिशत की क्षति फार्म स्तर पर तथा 2.8 प्रतिशत क्षति खुदरा व्यापारी के पास होती है। खेत में सर्वाधिक क्षति आम की तुड़ाई लग्गी से करने अथवा तने को हिलाने से होती है जो लगभग 7 प्रतिशत थी। सबसे कम क्षति (1.76 प्रतिशत) तोड़क यंत्र से आम तोड़ने में देखी गयी।

आँवला रस में भंडारण

आँवले के रस को सामान्य तापमान पर आठ महीने के लिए भंडारित कर अध्ययन करने पर पाया गया कि आँवला की चार किस्मों (एन. ए–7, चकैया, कृष्णा, कंचन) में गैलिक अम्ल, कैफिइक अम्ल, पी–काउमेरिक अम्ल, क्लोरोजेनिक अम्ल, इलैजिक अम्ल, कैटेचीन एवं इपीकैटेचीन जैसे पॉलीफिनाल प्रचुर मात्रा में पाये गये। एस्कार्बिक अम्ल भंडारण के दौरान घटता गया जबकि कार्बनिक अम्ल एवं साइट्रिक अम्ल भी प्रचुर मात्रा में पाया गया। साथ ही आक्जेलिक, टारटैरिक तथा मैलिक अम्ल भी पाये गये।

आम में क्विनालफॉस अवशिष्ट का अध्ययन

क्विनालफॉस आम के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कीटनाशी है। यह 2 एवं 4 मि.ली./लीटर की दर से आम में छिड़का जाता है तो इसका अवशिष्ट 22 दिनों तक रहता है। तुडाई उपरांत आम के पके फलों के गूदे में इसका अवशिष्ट नहीं पाया गया।

समसामयिकी

नास परिसर में आम प्रदर्शनी–सह–महोत्सव

संस्थान ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नास परिसर में आम प्रदर्शनी–सह–महोत्सव का आयोजन दिनांक 4 जुलाई, 2015 को किया। डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर तथा

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. के.एम.एल. पाठक, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान)

महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नयी दिल्ली की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. के.एम. एल. पाठक, उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) द्वारा किया गया। इस आम प्रदर्शनी के दौरान नास परिसर के आर.डब्ल्यू.ए. सदस्यों के लिए आम खाओ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

आम खाओ प्रतियोगिता का आयोजन

दिल्ली हाट में आम महोत्सव

संस्थान ने दिल्ली हाट में दिल्ली पर्यटन एवं यातायात विकास निगम लिमिटेड द्वारा आयोजित 27वें आम महोत्सव में 3 से 5 जुलाई, 2015 तक हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन दिल्ली के मुख्यमंत्री, श्री अरविन्द केजरीवाल ने किया। उन्होंने अपने भ्रमण के दौरान आम प्रदर्शनी में रूचि दिखायी। बाद में संस्थान के स्टॉल को सभी स्टॉलों में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

विश्व मृदा दिवस

संस्थान द्वारा 5 दिसंबर, 2015 को विश्व मृदा दिवस मनाया गया। इसमें संस्थान के आस–पास के हिस्सों के 20 गाँव के 250 किसानों एवं मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम से जुड़े वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष के परिप्रेक्ष्य में मृदा स्वास्थ्य की महत्ता तथा फसल उत्पादकता, पारिस्थितिकी स्थिरता तथा खाद्य सुरक्षा से संबंधित किसानों में जागरूकता फैलाने के लिए किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में मिश्रिक की सांसद, डॉ. (श्रीमती) अंजू बाला उपस्थित थीं। डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर हरदोई स्थित मलवान के पूर्व विधायक श्री सतीश वर्मा भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि महोदया ने स्वस्थ मृदा की उत्पादकता तथा पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले प्रभाव की महत्ता पर जोर दिया। इस अवसर पर किसानों को संबोधित करते हुए डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक ने मृदा स्वास्थ्य

माननीया सांसद डॉ. श्रीमती (अंजू बाला) मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित करती हुईं

तथा लाभकारी उत्पादन प्राप्त करने के लिए उपयुक्त पोषक तत्वों की महत्ता पर जोर दिया। इस अवसर पर 250 किसानों को मृदा स्वास्थ कार्ड बाँटे गये। संस्थान के वैज्ञानिकों ने किसानों की मृदा स्वास्थ तथा फल एवं सब्जियों के उत्पादन संबंधी समस्याओं का निराकरण भी किया।

राष्ट्रीय कार्यशाला–सह–सेमीनार

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ द्वारा दिनांक 22 से 23 दिसंबर, 2015 तक एक राष्ट्रीय कार्यशाला–सह–सेमीनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शीर्षक बागवनी फसलों में संरक्षित खेती के बढ़ते परिप्रेक्ष्य था। इस कार्यक्रम का उद्घाटन बिहार स्थित राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, डॉ. एस.आर. सिंह द्वारा किया गया। इसके उद्घाटन अवसर पर अतिथियों का स्वागत करते हुए डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक ने कहा कि आम, अमरूद तथा

कार्यशाला–सह–सेमिनार के अवसर पर स्मारिका का विमोचन

अन्य बागवानी फसलों के उत्पादन में संरक्षित खेती की बहुत महत्ता है। उन्होंने इस दिशा में संस्थान के योगदान का वर्णन किया। डॉ. वी.के. सिंह इस राष्ट्रीय कार्यशाला–सह–सेमीनार के आयोजक सचिव थे।

मेरा गाँव मेरा गौरव

मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम की शुरूआत किसानों एवं वैज्ञानिकों के बीच कृषि विज्ञान संबंधी समन्वयन स्थापित करने के लिए की गयी। इसके लिए संस्थान ने नोडल अधिकारी तथा सहायक नोडल अधिकारियों को भी निर्धारित किया। इसके लिए वैज्ञानिकों की टीम बनायी गयी जिसमें फसल उत्पादन, फसल सुधार, फसल सुरक्षा तथा तुड़ाई उपरांत प्रबंधन के विषय–विशेषज्ञ सम्मिलित किये गये। इस कार्यक्रम का कार्यान्वयन मलिहाबाद तथा काकोरी ब्लॉकों के चुनिंदा 40 गाँव

मेरा गाँव मेरा गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत किसान गोष्ठी जारी

में किया गया। द्वितीयक आँकड़े एकत्र किए गये तथा सर्वेक्षण हेतु पाँच गाँवों में बैठकों का आयोजन किया गया।

पूर्वोत्तर क्षेत्र

वर्ष 2015 के दौरान दक्षिण सिक्किम के सदम में अमरूद के ललित एवं श्वेता नामक किस्मों के मातृखण्ड स्थापित किये गए। इसके अंतर्गत ललित, श्वेता, धवल तथा लालिमा नामक किस्मों के पौधों को वितरित किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत दक्षिण सिक्किम के कृषि विज्ञान केन्द्रों के दो विषय

दक्षिण सिक्किम में अमरूद मातृखंड स्थापना हेतु चयनित किसान

दक्षिण सिक्किम के सदम के लिये ग्राफ्टेड पौध सामग्री

विशेषज्ञों एवं एक कार्यक्रम समन्वय की उपस्थिति में सितंबर माह में मूलवृंत पौधों का रोपण किया गया। दक्षिण सिक्किम के सदम में 100 किसानों को 3 से 4 सितंबर, 2015 तक अमरूद के मातृखण्डों की स्थापना से संबंधित प्रशिक्षण भी दिया गया।

आई.पी. प्रबंधन तथा प्रौद्योगिकियों का स्थानांतरण/वाणिज्यीकरण

संस्थान ने प्रौद्योगिकीयों के हस्तांतरण तथा स्नात्कोत्तर स्तर के विद्यार्थियों से संबंधित अनुसंधान हेतु अनेक संस्थाओं/संस्थानों से समझौता ज्ञापन किया हुआ है। इसी क्रम में केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान ने अजमेर स्थित एन.आर.सी.सीड स्पाइसेस से जुलाई, 2015 में अनुसंधान संबंधी सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। इसके अलावा उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद स्थित शिएट्स, बांदा स्थित बांदा विश्वविद्यालय के साथ भी एक समझौता ज्ञापन केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान ने किया जिसके तहत स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों को अनुसंधान संबंधित सुविधा उपलब्ध करवायी जायेगी। इस अवधि के दौरान संस्थान ने नवंबर, 2015 के पश्चिम बंगाल के कूच बेहार स्थित उत्तर बंगा कृषि विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन किया। यह समझौता ज्ञापन अक्टूबर–नवंबर 2015 के दौरान किया गया।

अमरूद की प्रिया पिंक तथा जी. विलास पसंद नामक किस्मों को पौध किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, नयी दिल्ली में सितंबर 2015 में फाइल किया गया।

पेटेंट आवेदन संख्या 115/डी.ई.एल/2011 का प्रारूप तैयार कर प्रथम परीक्षण रिपोर्ट का उत्तर दिया गया। यह उत्तर (नवंबर से दिसंबर 2015 के दौरान) पेटेंट ऑफिस, नयी दिल्ली को भेज दिया गया।

मानव संसाधन विकास

सेमीनार/संगोष्ठी/सम्मेलन आदि

- डॉ. मनीष मिश्रा तथा डॉ. (श्रीमती) अंजू बाजपेई ने दिनांक 11 जुलाई, 2015 को रिसर्च प्लेटफॉर्म ऑफ जीनोमिक्स में हिस्सा लिया।
- डॉ. मनीष मिश्रा ने उत्तर प्रदेश के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद में दिनांक 15 सितंबर, 2015 को कृषि एवं सहायक सेक्टर की 15वीं सलाहाकार समिति की बैठक में हिस्सा लिया।
- डॉ. ए. के. भट्टाचार्जी ने सीतापुर के कटिया में कृषि विज्ञान केन्द्र–II विज्ञान सलाहाकार समिति की बैठक में दिनांक 16 सितंबर, 2015 को हिस्सा लिया।
- डॉ. ए. के. भट्टाचार्जी ने हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान में दिनांक 3 से 5 नवंबर, 2015 तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय खाद्य डाटा सम्मेलन–खाद्य संरचना तथा जन पोषण स्वास्थ्य में हिस्सा लिया।
- डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. के.के. श्रीवास्तव एवं डॉ. एस.आर. सिंह ने जम्मू कश्मीर के श्रीनगर स्थित सी. आई. टी. एच. में समशीतोष्ण फलों एवं नट्स पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में 3 से 5 नवंबर, 2015 तक हिस्सा लिया।

प्रशिक्षण आयोजित

- संस्थान द्वारा जनजातीय उप योजना परियोजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश के कृषि विज्ञान केंद्र, सहडौल (02.09.2015), कृषि विज्ञान केंद्र, उमरिया (02.09.2015), सिद्धी के कुसमी ब्लॉक (03.09.2015), दिनदौरी के बजग ब्लॉक के शेराझर गाँव (04.09.2015), कृषि विज्ञान केंद्र, मंडाला (04.09.2015), कृषि विज्ञान केंद्र, शिवनी (07.09.2015) तथा बैतूल के गोराखार (08.09.2015) जिलों में एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में 350 किसान सम्मिलित हुए।
- संस्थान ने दिनांक 5 से 9 अक्टूबर, 2015 तक रहमानखेड़ा स्थित राजकीय कृषि प्रबंध संस्थान द्वारा प्रायोजित 35 किसानों को प्रशिक्षण प्रदान किया।
- संस्थान ने लखनऊ के गोमती नगर स्थित कृषि क्लीनिक तथा कृषि व्यवसाय प्रशिक्षण संस्थान के 34 प्रशिक्षुओं को दिनांक 18 से 19 सितंबर, 2015 तक प्रशिक्षण प्रदान किया।

प्रशिक्षण–सह–भ्रमण के दौरान कृषक

बैठकें

अनुसंधान सलाहाकार समिति

- भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ की 20वीं अनुसंधान सलाहाकार समिति की बैठक का आयोजन डॉ. बी.एस.के.के.वी, दापोली के पूर्व कुलपति, डॉ. के.ई. लवाण्डे की अध्यक्षता में दिनांक 09 जुलाई, 2015 को आयोजित किया गया। बैठक के दौरान डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक ने कार्रवाई रिपोर्ट के साथ–साथ संस्थान की उपलब्धियों को भी प्रस्तुत किया।

अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक जारी

- डॉ. शैलेन्द्र राजन ने नयी दिल्ली के भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में दिनांक 15 जुलाई, 2015 को आयोजित पूसा आम दिवस में हिस्सा लिया। उन्होंने किसानों को आम की किस्मों पर व्याख्यान भी दिया।
- डॉ. शैलेन्द्र राजन ने दिनांक 24 से 26 जुलाई, 2015 तक पटना में आयोजित आई.सी.ए.आर. स्थापना दिवस तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों के राष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लिया।
- संस्थान के प्रेक्षागृह में दिनांक 30 जुलाई, 2015 को

भारतीय निर्यात संगठन के समूह ने निर्यात बन्धु, निर्यात प्रक्रियाओं पर आयोजित एक कार्यशाला का आयोजन किया।

- डॉ. शैलेन्द्र राजन ने बैरकपुर स्थित सिफरी में दिनांक 19 सितंबर, 2015 को आयोजित आई.सी.ए.आर. क्षेत्रीय समिति–II की 22वीं बैठक की कार्रवाई एवं संस्तुतियों की मध्यावधि समीक्षा बैठक में हिस्सा लिया।
- डॉ. शैलेन्द्र राजन ने नयी दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के लाल बहादुर शास्त्री प्रेक्षागृह में दिनांक 23 से 24 नवम्बर, 2015 तक आयोजित बीज क्षेत्र में भारतीय–जर्मनी द्विपक्षीय समन्वयन डस कार्यशाला में हिस्सा लिया। उन्होंने बागवानी फसलों में डस टेस्टिंग के सत्र की अध्यक्षता की।
- डॉ. शैलेन्द्र राजन ने मेरठ स्थित भारतीय खेती प्रणाली अनुसंधान संस्थान में दिनांक 4 दिसंबर, 2015 को प्रीपेयरिंग रोड मैप फॉर एग्रीकल्चरल डेवलेपमेन्ट इन एग्रो क्लाईमेटिक जोन–अपर गैनजेटिक प्लेन विषयक कार्यशाला में हिस्सा लिया।
- संस्थान में दिनांक 06 दिसंबर, 2015 को संस्थान प्रबंध समिति की बैठक का आयोजन डॉ. एस. राजन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

विविध

प्रदर्शनी

- संस्थान ने राष्ट्रीय मीडिया क्लब, कानपुर द्वारा दिनांक 14 जुलाई, 2015 को कानपुर के स्वरूप नगर में आयोजित आम प्रदर्शनी में हिस्सा लिया।
- संस्थान ने परियोजना समन्वयक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, डी.के.एम.ए., नयी दिल्ली द्वारा दिनांक 20–21 अगस्त, 2015 तक बिहार के मोतीहारी स्थित पीपरा कोठी में आयोजित कृषि प्रदर्शनी में हिस्सा लिया।
- संस्थान ने दिनांक 4 नवंबर, 2015 को डॉ. वीरेन्द्र सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र धौरा, उन्नाव में आयोजित किसान मेला में हिस्सा लिया।

सम्मान

- डॉ. वी. के. सिंह ने कानपुर स्थित चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में दिनांक 20 नवंबर, 2015 को रिसेन्ट एडवांसेस इन फ्रूट एण्ड वेजीटेबल प्रोडक्शन पर के.वी.के. के वैज्ञानिकों को लीड व्याख्यान दिया।
- डॉ. मनीष मिश्रा दिनांक 22 से 23 दिसंबर, 2015 को आयोजित तकनीकी सत्र प्रोटेक्टेड स्ट्रकचर एण्ड प्रोडक्शन ऑफ क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल की राष्ट्रीय कार्यशाला–सह–सेमिनार में सह–अध्यक्ष थे।
- डॉ. वी. के. सिंह ने 23 से 24 नवंबर, 2015 को आयोजित क्लाइमेट चेन्ज एण्ड सस्टेनेब्ल डेवलेपमेन्टः इमर्जिंग इशूज एण्ड मीटीगेशन स्ट्रेटजीज के राष्ट्रीय संगोष्ठी में इमरजिंग प्रौसपैक्ट्स ऑफ प्रोटैक्टेड कल्टीवेशन फॉर फ्रूट्स एण्ड वेजीटेबल क्रॉप्स फॉर मिटीगेटींग द क्लाइमेट चेन्ज विषय पर कीनोट व्याख्यान दिया।
- डॉ. शैलेन्द्र राजन ने दिनांक 27 नवंबर, 2015 को नागपुर स्थित केन्द्रीय नीबू अनुसंधान संस्थान में सस्टेनेब्ल प्रोडक्शन पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में नीबू आनुवांशिक संसाधन तथा सुधार सत्र की अध्यक्षता की।
- डॉ. वी. के. सिंह ने नागपुर में दिनांक 27 से 29 नवंबर, 2015 तक आयोजित सस्टेनेब्ल सिट्रस प्रोडक्शनः वे फॉरवर्ड में फिजियोलोजी ऑफ फ्लॉवरिंग एण्ड फ्रूटिंग इन सीट्रस विषय पर व्याख्यान दिया।

आगंतुक

- डॉ. विनय प्रकाश श्रीवास्तव, निदेशक, राजकीय कृषि प्रबंध संस्थान, रहमानखेड़ा, उत्तर प्रदेश ने दिनांक 26 जुलाई, 2015 को संस्थान का भ्रमण किया।
- श्री रविनीश कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी तथा श्री हरीश नायर, अवर सचिव, सतर्कता–आई.सी.ए.आर, नयी दिल्ली ने दिनांक 8 जुलाई, 2015 को संस्थान का भ्रमण किया।
- डॉ. के. ई. लवाण्डे, पूर्व कुलपति, डॉ. बी.एस.के.के.वी., दापोली, डॉ. सी.ए. विरक्तमठ, प्रोफेसर कीट विज्ञान (सेवानिवृत्त), यू.ए.एस., जी.के.वी. के. बंगलुरू, डॉ. रमेश चंद्र, निदेशक, एनकैप, देव प्रकार शास्त्री मार्ग, पूसा, नयी दिल्ली, डॉ. शत्रुघन पाण्डे, आई.एम.सी. सदस्य, केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान तथा डॉ. टी. जानकीराम, सहायक महानिदेशक (बागवानी विज्ञान I) आई.सी.ए.आर., कैब–II, पूसा, नयी दिल्ली ने दिनांक 9 से 10 जुलाई, 2015 तक संस्थान का भ्रमण किया।
- डॉ. प्रकाश चंद्र, पूर्व वैज्ञानिक (निस्केयर–सी.एस.आई.आर., नयी दिल्ली) तथा अध्यक्ष, आई. सी. आई. ने दिनांक 6 अगस्त, 2015 को संस्थान का भ्रमण किया एवं आई. सी. आई. विषय पर व्याख्यान दिया।

वैयक्तिक

नवागंतुक

वैज्ञानिक

- डॉ. अजय कुमार त्रिवेदी, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पादप दैहिकी) ने 21 जुलाई, 2015 को संस्थान में कार्य ग्रहण किया।
- सुश्री स्वोस्ति शुभदर्शनी दास, वैज्ञानिक (फल विज्ञान) ने दिनांक 16 अक्टूबर, 2015 को संस्थान में कार्य ग्रहण किया।
- डॉ. आर. के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) ने दिनांक 24 नवंबर, 2015 को संस्थान में कार्य ग्रहण किया।
- डॉ. दीपक नायक, वैज्ञानिक (फल विज्ञान) ने संस्थान के पश्चिम बंगाल स्थित क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, मालदा में दिनांक 16 अक्टूबर, 2015 को कार्य ग्रहण किया।

प्रशासनिक

- श्री के. पी. यादव ने पदोन्नति उपरांत दिनांक 10 अक्टूबर, 2015 को संस्थान में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्य ग्रहण किया।

चयन

- डॉ. नीलिमा गर्ग, प्रधान वैज्ञानिक ने दिनांक 7 अगस्त, 2015 को कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल द्वारा चयनोपरांत संस्थान में तुड़ाई उपरांत प्रबंधन प्रभाग के अध्यक्ष के पद पर कार्य ग्रहण किया।

स्थानांतरण

- डॉ. एच. केशव कुमार, वैज्ञानिक (सूत्रकृमि विज्ञान) को दिनांक 26 नवंबर, 2015 को सी.टी.सी.आर.आई, तिरूवनन्थपुरम स्थानांतरित कर दिया गया।

- भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय, श्री प्रणव मुखर्जी ने हिंदी दिवस (14 सितंबर, 2015 को) के अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कंचन कुमार श्रीवास्तव, को हिंदी में मौलिक विज्ञान लेखन के लिए द्वितीय राजभाषा गौरव पुरस्कार प्रदान किया।

हिन्दी चेतना मास

संस्थान द्वारा 14 सितंबर से 13 अक्टूबर, 2015 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। हिन्दी चेतना मास कार्यक्रम की शुरूआत हिन्दी दिवस कार्यक्रम से की गयी है। इस अवसर पर बोलते हुए अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के निदेशक, डॉ. शैलेन्द्र राजन ने कहा कि संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी की असीम महत्ता है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी ने बोलचाल की भाषा के रूप में देश की एकता एवं अखण्डता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। हिन्दी चेतना मास के दौरान हिन्दी निबंध, हिन्दी वाद–विवाद, अनुवाद, कविता पाठ आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिन्दी चेतना मास 2015 का समापन हिन्दी कार्यशाला तथा पुरस्कार वितरण समारोह के साथ संपन्न हुआ।

प्रकाशन एवं संपर्क : डा. शैलेन्द्र राजन, निदेशक

संकलन एवं संपादन

अजय वर्मा, मनीष मिश्रा, ए. के. भट्टाचार्जी, बरसाती लाल एवं धीरज शर्मा

भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

(आई. एस. ओ. 9001 : 2008 संस्थान)

रहमानखेड़ा, डाकघर काकोरी, लखनऊ - 226 101

वेबसाइट : www.cish.res.in, ई-मेल: cish.lucknow@gmail.com

फोन : +91-522-2841022, 24 ; फैक्स: +91-522-2841025

army printing press
www.armyprintingpress.com
Lucknow (0522) 2481164